शिक्षा व्यक्तित्व विकास का आधार

सारांश

शिक्षा कई उपलब्ध साधनों में से एक है जिसके माध्यम से मानवीय विकास के गहनतर एवं समरस स्वरूप को संबंधित किया जा सकता है। शिक्षा को मानव निर्माण की प्रक्रिया कहा गया है। शिक्षा बुनियादी तौर पर इंसान या इंसानियत के निर्माण की प्रक्रिया है। यदि ऐसा है तो इसके द्वारा किस प्रकार के मनुष्य की रचना की जाय जिसे भारतीय चिंतन में उल्लेखित भाव ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः'' के लक्ष्य की ओर बढ़ने में विश्व समुदाय अभिप्रेरित हो सके।

मुख्य शब्द : कौशल, क्षितिज, स्वाभावगत, सांस्कृतिक

यू.एस. गुरू
प्रिंसिपल
शिक्षाशास्त्र विभाग
जो0 आर0 डो0 सो0 इ0
दमाह, सगर, मध्य प्रदेश

आर.एस. गुरू
प्रिंसिपल
शिक्षाशास्त्र विभाग
वी0 आई0 ई0 एस0
दमाह, सगर, मध्य प्रदेश

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के स्तरों एवं कौशल में सतत सुधार सुनिश्चित होता है। यह वैयक्तिक विकास का अप्रतिम साधन है। इस प्रकार व्यक्ति एवं समाज की जीवन शैली उसकी अभिव्यक्ति उसके आग्रह संस्कार एवं मूल्यों के निर्माण में शिक्षा एवं शिक्षा प्रक्रिया की अहम भूमिका होती है। उक्त परिपेक्ष्य में शिक्षा का उद्देश्य है ऐसे मानवीय गुणों का विकास करना जो व्यक्ति को समग्र पूर्णता की ओर ले जावे। शिक्षा मूलतः संस्कार एवं सोच निर्माण की प्रक्रिया है। इससे व्यक्ति एवं समाज दोनो की सामर्थ्य बढ़ती है। ज्ञान के नये क्षितिज उभरते हैं। मानवीय दक्षताओं का विकास होता है। नये संकल्प पनपते हैं तथा जीवन की पूर्णता की ओर ले जाने के लिए बहुआयामी चेष्ठाओं एवं मूल्यों को गति मिलती है।

शिक्षा की चरम परिणति व्यक्तित्व का विकास है व्यक्तित्व एक समग्रता सूचक पद है जिसके द्वारा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, स्वाभावगत, चारित्रिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक, सांस्कृतिक विशेषताओं का समन्वयात्मक रूप उजागर होता है। हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से एक विलक्षणता रखता है जिसमें उसके वंशानुक्रम तथा पर्यावरणीय अन्य कारणों का मिलाजुला प्रभाव देखा जा सकता है।

व्यक्तित्व विकास की इस प्रक्रिया की आपेक्षित मंजिल तक पहुँचने में (जेम्सडेलर) ने अपनी रिपोर्ट में चार प्रकार के शिक्षा स्तम्भों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

कुछ जानने के लिए सीखना.

इसका अर्थ यह अवबोध हेतु उपकरणों को अर्जित करना जो जीवन में साधन एवं साध्य दोनों ही है। साधन के रूप में यह व्यक्ति को अपने पर्यावरण को समझने में मदद पहुँचाता है। जिससे वह अपना संपूर्ण जीवन सम्मानपूर्वक जी सकें, व्यवसायिक दक्षताएं विकसित कर सके तथा संप्रेषण में समर्थ हो सके। साध्य के रूप में इसका प्रमुख आधार समझने, जानने, एवं ढूढने (खोजने) की क्रियाओं में सुख–बोध से संबंधित है।

कुछ कर सकने के लिए सीखना

इसका सीधा संबंध व्यावसासिक प्रशिक्षण से है जो सीखा है उसे व्यवहार में रूपांतरित कैसे किया जाये तथा शिक्षा को भावी कार्यों से कैसे संयोजित किया जाय।

साथ–साथ रह सकने के लिए सीखना–साथ–साथ रह सकने या सहयोगात्मक शैली में जीवन जीना। दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदशील, दूसरों को जानना, समान उद्देश्यों की प्रतिबद्धता तथा तदअनुभूति पूर्णजीवन

जीने की कला अर्जित करना।

कुछ होने के लिए सीखना

इसका तात्पर्य यह कि व्यक्ति का अपनी समस्याएं स्वयं हल करने में प्रवीण होना। निर्णय स्वयं ले सकने की क्षमता का विकास तथा अपने दायित्वों की पूर्ति में सक्षम होना। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा द्वारा व्यक्ति का सर्वोगींण विकास होना प्रमुख ध्येय है। व्यक्ति को पूर्ण मनुष्यत्व की ओर ले जाना जिससे उसके व्यक्तित्व के सभी धनात्मक पहलू तथा अभिव्यक्तियों की जटिलता उसके संकल्प में शामिल हैं।

शिक्षा के उपरोक्त सभी स्तंभ एक दूसरे से संबंधित ही नहीं अपितु एक दूसरे पर निर्भर भी हैं।

व्यक्ति विकास के आयाम

व्यक्तित्व विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तीन प्रकार की शिक्षा व्यवस्थाओं के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही रूपों में व्यक्तित्व विकास की पहल होती रही है।

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था

इसमें छात्र को एक विशेष समय स्थान एवं व्यक्ति या संरचना के अधीन रहकर ज्ञानार्जन, कौशल अधिग्रहण या प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं अन्य शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थान इसी व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं।

निरौपचारिक शिक्षा व्यवस्था

इसके अन्तर्गत संस्थागत या असंस्थागत रूप में समय स्थान एवं प्रशिक्षक प्रभुत्व से न जोड़कर शिक्षा के अभ्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्पन्न होती है। इसके अंतर्गत खुले विश्वविद्यालय, पत्राचार शिक्षण संस्थान, आकाशवाणी प्रसार सेवा केन्द्रों द्वारा आयोजित शिक्षण व्यवस्थाएं शामिल हैं।

अनौपचारिक शिक्षा या आनुसांगिक शिक्षा

इस व्यवस्था में व्यक्ति को सहज रूप में उपलब्ध परिस्थितियों के माध्यम से जीवन कौशल अर्जित करने की क्षमता प्रदान की जाती है।

इस शिक्षा के स्त्रोत एवं साधन समाज की व्यवस्था के अनुरूप एवं अनंत होते हैं कुछ प्रमुख साधन हैं, मित्र मंडली क्लब, परिवार आदि जिनमें एक दूसरे से मिलजुल कर रहकर या परस्पर वार्तालापों के माध्यम से व्यक्ति कुछ नवीन जानकारियाँ, कौशल या ज्ञान अर्जित करता रहता है।

उपरोक्त व्यवस्थाओं में प्रतिदिन नूतन आयामों का समावेश होता रहता है जिससे परम्परागत शिक्षा व्यवस्था परिमार्जित होती रहती है।

व्यक्तित्व विकास हेतु कार्यक्रम

शिक्षा के द्वारा व्यक्तित्व विकास हेतु विविध प्रकार के कार्यक्रम चलाये जा सकते है जिनका सीधा संबंध व्यक्तित्व के संज्ञानात्मक एवं संज्ञान सहगामी पक्षों से जोड़ा जा सकता है।

सेवाकालीन गहन प्रशिक्षण एवं पुनवर्लन कार्यक्रम

इसके अंतर्गत शिक्षकों, पर्यवेक्षकों, प्रशासकों तथा नीति–निर्माताओं के लक्ष्य समूहों को ध्यान में रखकर विशेष प्रकार की कौशल केन्द्रित कार्यशालाएं गोष्ठियाँ एवं शिविर आयोजित किये जा सकते हैं।

सतत शिक्षा

दूरदर्शन, आकाशवाणी, कम्प्यूटर, पत्राचार पाठ्यक्रम आदि के माध्यम से संबंर्धन एवं दक्षता विकास के विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं।

विशेष अध्ययन पाठयक्रम

दूरवर्ती शिक्षा पद्धति के माध्यम से व्यवसायिक दक्षता विकसित करने के लिए ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते है। जिनसे भाषायी कुशलता, तकनीकी दक्षता तथा सम्प्रेषण कला का विकास होता है।

सूक्ष्म ग्राहिता प्रशिक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्यों पर आधारित परिचर्चाएँ व्याख्यान एवं गोष्ठियॉ।

विचाराबेस प्रक्रिया सत्रों का आयोजन

इनसे व्यक्तित्व के सृजनशील पक्षों का विकास होता है।

निर्देशन एवं उपबोधन कार्यक्रम

इसमें निर्देशन एवं उपबोधन की व्यवस्था की जाती है जिसमें विशेष अध्ययन की विधियों, व्यक्तिगत समस्याओं के निदान एवं चिंतन के बारे में चर्चा की जाती है।

दक्षता विकास कार्यक्रम

लक्ष्य समूहों को दृष्टिगत रखकर सतत शिक्षा की अल्पकालीन योजनाओं के रूप में कुटीर उद्योग, सूचना सम्प्रेषण, लघु उद्योग एवं सम्प्रेषण तकनीकी से संबंधित उद्यमों तथा उद्यमिता की योजना के बारे में चर्चा की जाती है।

निदानात्मक परीक्षाएं

इनमें कुशल एवं प्रभावी शिक्षकों की सहभागिता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

पुनष्चर्या पाठ्क्रमों को गतिशील बनाना

इसका संबंध शिक्षा की गुणवत्ता से है।

क्रियात्मक अनुसंधान की विधियों में गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्षमता विकास का कार्य सत्त रूप से करने के लिए कल्पनाशील एवं कुशल शिक्षकों की टीम तैयार करने के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण की नितांत आवश्यकता है।

स्वामूल्यांकन कार्यक्रम

इसमें व्यक्तित्व के संज्ञानात्मक एवं संज्ञान सहगामी पक्षों से संबंधित गहन परीक्षणों हेतु विभिन्न प्रकार के परखों के अनुप्रयोग में विशेष योग्यता विकसित ही जा सकती है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व मापन के विविध उपकरणों के बारे में जानकारी प्रदान करना है।

संसाधनों के आधुनीकरण का कार्यक्रम

इसमें अभिरूचि केन्द्रो, युवा केन्द्रों, वाचनालयों एवं पुस्तकालयों में ऐसे उपकरण उपलब्ध कराना जो आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के अनुरूप हों।

अतःक्रियात्मक सत्रों आयोजन

इसमें सुयोग्य वक्ताओं, विशेषज्ञों तथा प्रतिष्ठित विद्वानों को बुलाकर उनके वार्तालाप एवं साक्षात्कार की व्यवस्था की जा सकती है।

वैश्वीकरण से संबंधित समस्याओं पर आधारित कार्यक्रम

शिक्षा एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की भागीदारी के आधार पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं जिनका संबंध व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृति एवं शैक्षिक जीवन की अपेक्षाओं से संबंधित है।

कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु युक्तियाँ

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्तित्व के गुणों का विकास करना है। इसका आधार व्यक्तित्व के विकास की संभावनाओं पर टिका होता है। अतः व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित युक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है।

दीर्घकालीन युक्तियाँ

उपबोधन आश्रित, शिक्षक आश्रित, सेवार्थी आश्रित एवं अध्ययन सामग्री आश्रित युक्तियाँ जिनका वर्णन पूर्व में किया जा चुका है, दीर्घ कालीन युक्तियॉ हैं।

अल्पकालीन युक्तियाँ

व्याख्यान विचारावेश प्रक्रिया सूक्ष्मग्राहिता प्रशिक्षण, एवं स्वमूल्यांकन में सभी अल्पकालीन युक्तियॉ है ये सभी युक्तियाँ विशेष तौर पर निरौपचारिक शिक्षा उपक्रमों जैसे दूरवर्ती शिक्षा पत्राचार पाठयक्रम, सतत् शिक्षा तथा मुक्त शिक्षण के संदर्भ में विशेष महत्वपूर्ण होती है।

शिक्षा के उपक्रम

शिक्षा के सभी उपक्रमों का प्रयोग प्रभावी, कुशल एवं दूरदर्शिता के सिद्धांतों पर केन्द्रित होना चाहिए न कि केवल सरकारी प्रयासों पर।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अन्वेशिका (2007) शिक्षक शिक्षा की भारतीय पत्रिका, एन. सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, भाग 04(1)।
2. जोशी किरीट (1976) एजुकेशन फार पर्सनलिटी डेवलेपमेंट– एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
3. यूनेस्को (1996) लर्निंग द ट्रेजर विदिन।
4. यूनेस्को (1972) लर्निंग टू वी.।
5. यूनेस्को (1997) रीन्इजीनियरिंग एजूकेशन फार चेंज, एजूकेशनल इन्वोवेशन फार डेवलेपमेंट रिपोर्ट आफ द सेकण्ड यूनोस्को एसिड।
6. पान्डेय के.पी. (1995) आधुनिक भारतीय समाज एवं शिक्षा दर्शन– आशा शिक्षक निलयम।
7. वर्मा एम. (1969) द फिलासोफी ऑफ इंडियन, एजूकेशन, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।